जैन दर्शन के "पंच महाव्रतो का सामाजिक जीवन में योगदान"

*डॉ. बंशी धर रावत

शोध सारांश

"दर्शन"शब्द दृश् धातु में ल्युट् प्रत्यय करने से बना है। यु को अनादेश होकर दर्शन शब्द की व्युत्पत्ति होती है जिसका सामान्यतया अर्थ में चक्षु मार्ग से देखना न होकर ज्ञान प्राप्ति के साधन का आध्यात्मक दृष्टि से दर्शन अर्थात् साक्षात्कार करना ही दर्शन कहलाता है। प्रत्येक दर्शन का उद्देश्य स्पष्ट है –तत्त्वदर्शन अर्थात् सत्य का साक्षात्कार करना। समस्त भारतीय दर्शनों को स्थूल रूप से दो भागों में विभक्त किया गया है –आस्तिक और नास्तिक। आस्तिक "दर्शन वे है जो वेदों की प्रमाणिकता को मानते है और "नास्तिक "वे है –जो वेदो की प्रामाणिकता को नही मानते है। इस व्याख्या के अनुसार नास्तिक दर्शन तीन है – 1. चार्वाक्, 2. बौद्ध और 3. जैन ये तीनों दर्शन वेदों की प्रमाणिकता को नही मानतें। वेदो की प्रमाणिकता को मानने वाले आस्तिक दर्शन छः है –(1) न्याय (2) वैशेषिक, (3) सांख्य (4) योग (5) मीमांसा (6) वेदान्त ।

जैन दर्शन

जैन दर्शन के संस्थापक वर्धमान महावीर (599–527 ई.पू.) थे उनकी शिक्षायें उनसे पहले ऋषभ देव, पार्श्वनाथ आदि तीर्थकरों की मूल अहिंसा सिद्धान्त के अनुसार थी। उनके निर्वाण प्राप्त करने के पश्चात् उनके अनुयायी दो भागों में विभक्त हो गये – (1) दिगम्बर व (2) श्वेताम्बर । दिगम्बर मार्ग के अनुयायियों का यह मत है कि मोक्ष के इच्छुक को चाहिए कि वह अपनी सभी वस्तुओं का परित्याग कर दे। स्त्रियाँ मोक्ष की अधिकारिणी नहीं हैं। अतः एवं इस मार्ग के अनुयायी पूर्ण दिगम्बरत्व (नग्नता) का प्रचार करते थे ।

श्वेताम्बर मार्ग के अनुयायी श्वेताम्बर (श्वेतवस्त्र) को पहनना स्वीकार करते थे और उनके मतानुसार स्त्रियाँ भी मोक्ष की अधिकारिणी है।

जैनों के प्रमाणिक ग्रन्थ सिद्धान्त या आगम है। भद्रबाहु जैनों के सबसे प्राचीन लेखक थे । इस नाम के दो जैन लेखक थे, एक प्राचीन और दूसरा परकालीन उन दोनों का समय क्रमशः लगभग 433 – 357 ई.पू. और लगभग 12 ई.पू. माना जाता है। इनके बाद सिद्धसेन दिवाकर (पंचमी शती) और अकलड़ देव (अष्टम शती) आदि विद्वानों ने जैन दर्शन को बहुत समृद्ध बनाया ।

जैन धर्म के पंच महाव्रत

जैन धर्म के पंच महाव्रत – 1 अहिंसा 2. सत्य 3. अस्तेय 4. बह्मचर्य और 5. अपरिग्रह माने गये है। इन पंच

महाव्रतों की महत्ता उपनिषद्, के ऋषि तथा बौद्ध दार्शनिक भी मानते है। बौद्ध दार्शनिक इसे पंचशील के रूप में मानते है। ईसाई धर्म के जो दश आदेश है वे भी इनसे मिलते जुलते है। किन्तु जैन जिस कठोरता के साथ इन व्रतों का पालन करते है वैसी कठोरता शायद ही अन्यत्र मिलती है।

अहिंसा

अहिंसा का अर्थ है जीव हिंसा का वर्जित होना। जीव का अस्तित्त्व केवल त्रस या गतिशील द्रवों में नहीं वरं स्थावर द्रव्यों में भी है।

उदाहरणार्थः– वनस्पति, क्षिति, जल आदि अस्तिकाय द्रव्यों में भी जीव का अस्तित्व है। अतः जैनों को उद्देश्य यह नही है कि केवल त्रस जीवो की ही हिसां नहीं हो बल्कि वे स्थावर जीवों को भी हिंसा करना निकृष्ट समझते है।अतः जिससे श्वास लेने में या फैंकने में वायु स्थिति जीवों की हिंसा न हो जाये। साधारण ग्रहस्थों के लिए अत्यन्त कठिन है।

जैन मन, वचन और कर्म तीनों से अहिंसा का पालन करने पर बल देते है यहाँ तक कि वे जीव की हिंसा करना ही पर्याप्त नहीं समझते, बल्कि हिंसा के सम्बन्ध में सोचना, बोलना या दूसरों के हिंसा करने की अनुमति या प्रोत्साहन देना भी उनके लिए अधर्म है।

सत्य

सत्य का अर्थ मिथ्या वचन का परिणाम है। सत्यवादिता का आदर्श है सुनृत जो सत्य सबका हितकारी हो और प्रिय हो, उसे सुनृत कहते है । (प्रियं पथ्यं वचसतथ्य सुनृत व्रतमुच्यते) सत्यव्रत का पालन करने के लिए मनुष्य को लोभ, ड़र और क्रोध को दूर करना चाहिए और किसी का उपहास करने की प्रवृति का भी दमन करना चाहिए।

अस्तेय

अस्तेय का अर्थ है और वृत्ति का वर्जन अर्थात् बिना दिये परद्रव्य का ग्रहण करना ही अस्तेय है। जैनो के अनुसार किसी जीव का प्राण जिस तरह पवित्र है उसी तरह उसकी धन सम्पत्ति भी है एक जैन विद्वान् के अनुसार धन सम्पत्ति मनुष्य का बाह्य जीवन है अतः धन सम्पत्ति का अपहरण मानो उसके जीवन का ही अपहरण है। जीवन का अस्तित्व प्रायः धन पर ही निर्भर करता है।

ब्रह्मचर्य

ब्रह्मचर्य में सभी प्रकार की कामनाओं का त्याग करना पड़ता है अर्थात् वासनाओं का परित्याग ही ब्रह्मचर्य कहलाता है। अनेक लोग ब्रह्मचर्य से केवल कौमार्य जीवन समझते है। जैन इससे केवल इन्द्रिय सुखों का ही नहीं बल्कि सभी प्रकार के कामों का परित्याग समझते है कि वे कहते है कि कभी–कभी ऐसा होता है कि हम कर्म द्वारा तो इन्द्रिय सुख का उपभोग बन्द कर देते है किन्तु मन और वचन के द्वारा उनका उपभोग करते ही है। इसलिए ब्रह्मचर्य व्रत का पूर्ण रूप से पालन करने वालों को सभी प्रकार कामनाओं का त्याग करना ही पड़ता हैं। विषय मानसिक हो या ब्राह्म, सूक्ष्म हो या स्थूल ऐहिक हो या पारलौकिक, अपने लिए हो या अन्य किसी के लिए।

अपरिग्रह

विषयों से पूरा–पूरा अनासक्त होना ही अपरिग्रह कहलाता है। इस व्रत के लिए उन सभी विषयों का परित्याग करना पड़ता है जिनके द्वारा इन्द्रिय सुख की उत्पत्ति हो। ऐसे विषयों के अन्तर्गत सभी प्रकार के शब्द, स्पर्श, रूप , स्वाद तथा गंध आ जाते है।

पंच महाव्रतों का सामाजिक जीवन में योगदान–

जैन धर्म के पंच महाव्रतों के पालन करने से मानव जीवन अत्यन्त सामान्य बन सकता है। उसका जीवन शान्ति व सुख–समृद्धि से युक्त हो सकता है। मानव जीवन में आने वाली विभिन्न कठिनाईयों से निजात पाया जाता है। उसका जीवन और भी बेहतर बन सकता है।

अहिंसा का सामाजिक जीवन में योगदान –

व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है उससे अनेक जीव पोषित होते है। सभी जीव अपनी–अपनी रक्षा चाहते है। व्यक्ति के सामाजिक प्राणी होने के नाते उसके दैनन्दिन के जीवन में अहिंसा का अत्यधिक महत्त्व है। सामाज में अहिंसा होने से मानव जीवन में शान्ति व सद्भाव कायम होता है। सम्पूर्ण समाज में अमन–चैन का वातावरण बनता है। प्राणी मात्र को किसी प्रकार की चोट पहुँचाना ही हिंसा है। अहिंसा मनसा, वाचा, कर्मणा होना चाहिये। जैन धर्म में अहिंसा का बखूबी वर्णन है। जैन धर्म की आधार शिला ही अहिंसा है। जैन धर्म के तीर्थंकरों ने अहिंसा पर अत्यधिक बल दिया है। अहिंसा से समाज में सौहार्द पूर्ण वातावरण बना है। अहिंसा पंच महाव्रतों में सबसे प्रमुख व महत्वपूर्ण व्रत है। इस प्रकार अहिंसा का सामाजिक जीवन में बड़ा योगदान है।

सत्य का सामाजिक जीवन में योगदान

अंग्रेजी में कहा है– "Don't tell a lie" (कभी झूँठ मत बोलो) अर्थात् सदैव सत्य बोलो। संस्कृत मे भी कहा है– **"सत्यं वद"**

सत्य बोलने से समाज में कटुता का जन्म ही नहीं होता। समाज में व्यक्तियों के आपस में विश्वास पैदा करने के लिए सत्य का होना नितान्त आवश्यक है। सत्य से विश्वास बढ़ता है व विश्वास से स्नेह पनपता है।

जैनी तीर्थकरों ने सत्य वादिता पर भी जोर दिया व इसको एक महाव्रत की तरह अपनाया जिससे व्यक्ति का सामाजिक जीवन अधिक सुखमय बना।

अस्तेय का सामाजिक जीवन में योगदान

चौर वृत्ति का वर्णन ही अस्तेय है। चौर वृत्ति प्रायः आदि काल से ही पायी जाती है। जिससे सामाजिक प्राणी अपने धन व सम्पत्ति को लेकर हमेशा से ही चिन्तित रहा है। चौर वृत्ति से समाज में भय का माहौल बनता है जिससे व्यक्ति की उन्नति प्रभावित होती है।

जैन मुनियों ने अस्तेय को भी एक महाव्रत की तरह अपनाने पर बल दिया जिससे मनुष्य में यह बुराई जड़ से मिट सके। इसलिए सुखमय सामाजिक जीवन में अस्तेय का भी बड़ा योगदान है।

ब्रह्मचर्य का सामाजिक जीवन में योगदान

वासनाओं का परित्याग ही ब्रह्मचर्य है। इन्द्रिय सुखों के साथ–साथ सभी प्रकार की वासनाओं से विमोह रखना ही ब्रह्मचर्य कहलाता है। इस महाव्रत से विशेषकर नारी में सुरक्षा की भावना उत्पन्न होती है जिससे समाज में कलुषिता का जन्म नहीं होता है। ब्रह्मचर्य महाव्रत से जैन मुनियों ने समाज में नारी सुरक्षा की भावना उत्पन्न की व समाज को एक नई सोच व दिशा प्रदान की।

अपरिग्रह का सामाजिक जीवन में योगदान

अपरिग्रह अर्थात संग्रह नहीं करना। पूर्ण रूप से विषयों में अनासक्त होना। संग्रह वृत्ति से अन्य मनुष्यों का विकास नहीं होता। समाज में विभेद की स्थिति बन जाती है। निम्न व उच्च वर्ग बन जाते है समाज में गरीबी व अमीरी उत्पन्न हो जाती है जिससे गरीबों में हीन भावना उत्पन्न हो जाती है जिससे समाज में विखण्ड़न की स्थिति जन्म लेती है।

जैन मुनियों ने अपरिग्रह नामक महाव्रत अपनाने पर जोर दिया जिससे समाज में विभेद की स्थिति न बन सके।

इस प्रकार पंचमहाव्रतों का सामाजिक जीवन में अत्यधिक योगदान है।

***व्याख्याता**
संस्कृत विभाग
स्व. राजेश पायलट
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बाँदीकुई (दौसा)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जिण धम्मो – आचार्य नरेश
2. जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण – प्रेम सुमन जैन अरविन्द प्रकाशन उदयपुर 2001
3. आचारांग सूत्र – आगम प्रकाशन ब्यावर 1980
4. आचारांग चयनिका – संपादक डॉ. कमल चन्द्र सोगानी प्राकृत भारती जयपुर 1987
5. अहिंसा के अछूते पहलू – आचार्य महाप्रज्ञ
6. जैन धर्म दर्शन और संस्कृति – डॉ. सागर मल जैन
7. उपासक दशांग सूत्र – मधुकर मुनि
8. जैन आचार्य सिद्धान्त और स्वरूप – देवेन्द्र मुनि (आचार्य)